दा'वते इस्लामी की झलकियां

DAWATE ISLAMI KI JHALKIYAN (HINDI)

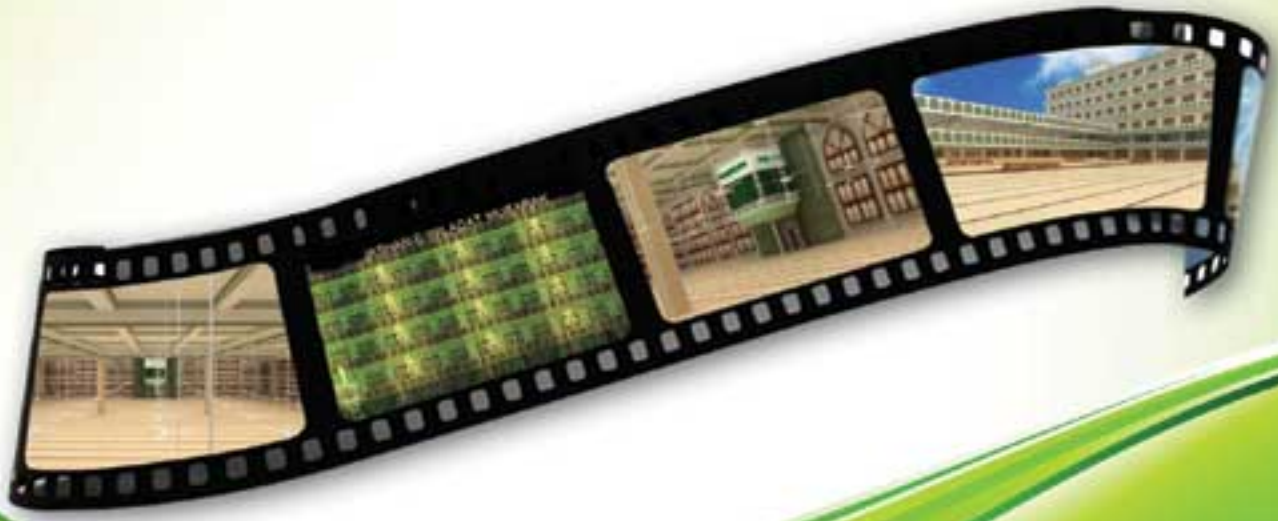

مکتبۃ المدینہ
(دعوت اسلامی)
SC 1286

पेशकश :
मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

दा'वते इस्लामी की झलकियां

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم फ़रमाते हैं, ''जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजे **अल्लाह** तआ़ला उस पर दस बार रह़मत नाज़िल फ़रमाएगा।''

(مسلم ص۲۱٦ الحدیث ٤٠٨)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **महब्बत** की उस ने मुझ से **महब्बत** की और जिस ने मुझ से **महब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (تاریخ دمشق، ج۹ ص۳٤۳ دارالفکر بیروت)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم ने फ़रमाया :

''**مَنْ تَمَسَّكَ بِسُنَّتِیْ عِنْدَ فَسَادِ اُمَّتِیْ فَلَهٗ اَجْرُمِائَةِ شَهِیْدٍ**'' (مشکوۃ المصابیح، ج ۱، ص۵۵ حدیث۱۷٦)

(या'नी) जिस ने मेरी उम्मत के बिगड़ते वक़्त मेरी सुन्नत को मज़बूत़ थामा तो उसे 100 शहीदों का सवाब है। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الحَنّان इस ह़दीस के तह़त फ़रमाते हैं : शहीद तो एक बार तलवार का ज़ख़्म खा कर पार हो जाता है मगर येह **अल्लाह** का बन्दा उ़म्र भर लोगों के त़ा'ने और ज़बानों के घाव खाता रहता है। **अल्लाह** और **रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की ख़ात़िर सब कुछ बरदाश्त करता है। और इस का जिहाद जिहादे अक्बर है जैसे इस ज़माने में दाढ़ी रखना, सूद से बचना वग़ैरा। (मिरआत, जि. 1, स. 173)

दा'वते इस्लामी की ज़रूरत

पारह 4 **सूरए आले इ़मरान** आयत नम्बर 104 में **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने हिदायत निशान है :

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ یَّدْعُوْنَ اِلَی الْخَیْرِ وَ یَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ یَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾ (پ ٤ اٰلِ عمران)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में एक गुरौह ऐसा होना चाहिये कि भलाई की त़रफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मन्अ़ करें और येही लोग मुराद को पहुंचे।

इस आयते मुक़द्दसा की तफ़्सीर बयान करते हुए **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيهِ رَحمةُ الحَنّان **तफ़्सीरे नईमी जिल्द 4 सफ़हा 72** पर फ़रमाते हैं : ''ऐ मुसल्मानो ! तुम सब को ऐसी जमाअ़त होना चाहिये या ऐसी जमाअ़त बनो या ऐसी जमाअ़त बन कर रहो जो तमाम टेढ़े लोगों को ख़ैर (या'नी भलाई) की दा'वत दे, काफ़िरों को ईमान की, फ़ासिक़ों को तक़्वे की, ग़ाफ़िलों को बेदारी की, जाहिलों को इल्मो मा'रिफ़त की, ख़ुश्क मिज़ाजों को लज़्ज़ते इश्क़ की, सोने वालों को बेदारी की और अच्छी बातों, अच्छे अ़क़ीदों, अच्छे अ़-मलों का ज़बानी, क़-लमी, अ़-मली, क़ुव्वत से, नरमी से (और हाकिम अपने महकूम को) गरमी से हुक्म दे, और बुरी बातों, बुरे अ़क़ीदे, बुरे कामों, बुरे ख़यालात से लोगों को ज़बान, दिल, अ़मल, क़लम, तलवार से (अपने अपने मन्सब के मुताबिक़) रोके।'' (تفسیر نعیمی ج۴ ص۷۲)

छोटे बड़े सभी मुबल्लिग़ हैं

मुफ़्ती साहिब رحمۃُ اللہِ تعالٰی علیہ मजीद फ़रमाते हैं : ''सारे मुसल्मान मुबल्लिग़ हैं, सब पर ही फ़र्ज़ है कि लोगों को अच्छी बातों का हुक्म दें और बुरी बातों से रोकें।'' मतलब येह कि जो शख़्स जितना जानता है उतना दूसरे इस्लामी भाइयों तक पहुंचाए जिस की ताईद में **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رحمۃُ اللہِ تعالٰی علیہ नक़्ल करते हैं : हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم ने फ़रमाया :

بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَلَوْ اٰيَةً ''मेरी त़रफ़ से पहुंचा दो अगर्चे एक ही आयत हो।''

(صَحِيحُ البُخارِی ج ٢ ص٤٦٢ حديث٣٤٦١)

दुआ़एं क़बूल नहीं होंगी

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رضی اللہ تعالٰی عنہ बयान करते हैं कि नबिय्ये पाक صَلَّى اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है तुम ज़रूर नेकी का हुक्म देते रहना और बुराई से रोकते रहना वरना अ़न्क़रीब **अल्लाह** तआ़ला तुम पर अ़ज़ाब भेज देगा। फिर तुम दुआ़ करोगे तो तुम्हारी दुआ़ क़बूल न होगी।

(جامع الترمذی، کتاب الفتن ،بَاب مَا جَاءَ فِی الْأَمْرِ بِالْمَعْرُوفِ......الخ ج ٤ ص٦٩ حديث٢١٧٦)

अ़ज़ाबे इलाही की वई़द

हज़रते सय्यिदुना जरीर رضی اللہ تعالٰی عنہ बयान करते हैं कि मैं ने प्यारे आक़ा صَلَّى اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم को येह फ़रमाते सुना : जिस क़ौम में गुनाहों के काम किये जा रहे हों और वोह उन गुनाहों को मिटाने की क़ुदरत रखते हों और फिर भी न मिटाएं तो **अल्लाह** तआ़ला उन को मरने से पहले अ़ज़ाब में मुब्तला कर देगा।

(سنن ابی داوٗد کتاب الملاحم ج٤ ص١٦٤ حديث٤٣٣٩)

''दा'वते इस्लामी'' का आग़ाज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह रहीम عَزَّوَجَلَّ ने **उम्मते महबूबे करीम** علٰی صاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالتَّسلیم को हर दौर में ऐसी नाबिग़ए रूज़गार हस्तियां अ़ता फ़रमाईं जिन्हों ने न सिर्फ़ ख़ुद اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी का हुक्म और बुराई से मन्अ़ करने) का मुक़द्दस फ़रीज़ा ब त़रीक़े अहसन अन्जाम दिया बल्कि मुसल्मानों को अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करने का ज़ेहन दिया। उन्ही में

एक हस्ती **शैखे़ तरीक़त**, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ भी हैं, जिन्हों ने सि. 1401 हि. ब मुत़ाबिक़ 1981 ई. में बाबुल मदीना (कराची) में तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" के म-दनी काम का आग़ाज़ अपने चन्द रु-फ़क़ा के साथ किया। **आप** دامت برکاتہم العالیہ ख़ौफे़ ख़ुदा व इ़श्के़ रसूल, जज़्बए इत्तिबाए़ कु़रआनो सुन्नत, जज़्बए एह़याए सुन्नत, ज़ोह्दो तक़्वा, अ़फ़्वो दर गुज़र, सब्रो शुक्र, आ़जिज़ी व इन्किसारी, सा-दगी, इख़्लास, ह़ुस्ने अख़्लाक़, दुन्या से बे रग़बती, ह़िफ़ाज़ते ईमान की फ़िक्र, फ़रोगे़ इ़ल्मे दीन, खै़र ख़्वाहिये मुस्लिमीन जैसी सिफ़ात में यादगारे अस्लाफ़ हैं। **आप** دامت برکاتہم العالیہ ने इस म-दनी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" के ज़रीए़ **लाखों** मुसल्मानों बिल ख़ुसूस नौ जवान इस्लामी भाइयों और बहनों की ज़िन्दगियों में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा कर दिया, कई बिगड़े हुए नौ जवान **तौबा** कर के राहे रास्त पर आ गए, बे नमाज़ी न सिर्फ़ **नमाज़ी** बल्कि नमाज़ें पढ़ाने वाले (या'नी इमामे मस्जिद) बन गए, मां बाप से ना ज़ैबा रविय्या इख़्तियार करने वाले **बा अदब** हो गए, कुफ़्र के अंधेरों में भटकने वालों को **नूरे इस्लाम** नसीब हुवा, यूरोपी मुमालिक की रंगीनियों को देखने के ख़्वाहिश मन्द **का'बतुल मुशर्रफ़ा व गुम्बदे ख़ज़रा** की ज़ियारत के लिये **बे क़रार** रहने लगे, दुन्या के बे जा ग़मों में घुलने वाले फ़िक्रे आख़िरत की म-दनी सोच के **ह़ामिल** बन गए, फ़ोह़्श रसाइल और फ़ूहड़ डाइजस्टों के शाइक़ीन उ़-लमाए अहले सुन्नत دامت فیوضہم के रसाइल और दीगर दीनी कुतुब का **मुत़ा-लआ़** करने लगे, तफ़रीह़ की ख़ात़िर सफ़र के आ़दी म-दनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले बन गए और मह़ज़ दुन्या की दौलत इकठ्ठी करने को मक़्सदे ह़यात समझने वालों ने इस म-दनी मक़्सद को अपना लिया कि اِنْ شَآءَاللہ عزوجل "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।**"

(1) 72 मुमालिक : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عزوجل तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" ता दमे तह़रीर दुन्या के तक़रीबन **72 मुमालिक** में अपना **पैग़ाम** पहुंचा चुकी है और **आगे कूच** जारी है।

(2) गै़र मुस्लिमों में तब्लीग़ : लाखों बे अ़मल मुसल्मान, नमाज़ी और **सुन्नतों के आ़दी** बन चुके हैं। **मुख़्तलिफ़ मुमालिक में गै़र मुस्लिम** भी **मुबल्लिग़ीने** दा'वते इस्लामी के हाथों **मुशर्रफ़ ब इस्लाम** होते रहते हैं।

(3) म-दनी क़ाफ़िले : "आ़शिक़ाने रसूल" के सुन्नतों की तरबिय्यत के बे शुमार **म-दनी क़ाफ़िले** मुल्क ब मुल्क शहर ब शहर और क़रिया ब क़रिया सफ़र कर के इ़ल्मे दीन और सुन्नतों की बहारें लुटा रहे और **नेकी की दा'वत** की धूमें मचा रहे हैं।

(4) म-दनी तरबिय्यत गाहें : मु-तअ़द्दद मक़ामात पर तरबिय्यत गाहें क़ाइम हैं जिन में दूर व नज़्दीक से इस्लामी भाई आ कर क़ियाम करते, **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत में सुन्नतों की तरबिय्यत पाते और फिर कु़र्बो जवार में जा कर "नेकी की दा'वत" के **म-दनी फूल** महकाते हैं।

(5) मसाजिद की ता'मीर : के लिये "मजलिसे ख़ुद्दामुल मसाजिद" क़ाइम है, मुल्क व बैरूने मुल्क **मु-तअ़द्दद मसाजिद की ता'मीरात** का हर वक़्त सिल्सिला रहता है, कई शहरों में म-दनी मराकिज़ "फै़ज़ाने

मदीना'' की ता'मीरात का काम भी जारी है।

(6) आइम्मए मसाजिद : बे शुमार मसाजिद के इमाम व **मुअज़्ज़िनीन** और ख़ादिमीन के तक़र्रुर के साथ साथ मुशा-हरे (तन-ख़्वाहों) की अदाएगी का भी सिल्सिला है।

(7) गूंगे, बहरे और नाबीना (ख़ुसूसी इस्लामी भाई) **:** इन के अन्दर भी **म-दनी काम** हो रहा है और इन के **म-दनी क़ाफ़िले** भी सफ़र करते रहते हैं। नीज़ नाबीना और गूंगे बहरों में ''म-दनी काम'' बढ़ाने के लिये इशारों की ज़बान सिखाने के लिये उ़मूमी या'नी नॉर्मल इस्लामी भाइयों में वक़्तन फ़ वक़्तन 30, 30 दिन के कोर्सिज़ बनाम **क़ुफ़्ले मदीना कोर्स** करवाए जाते हैं।

क्रिस्चेन का क़बूले इस्लाम

बाबुल मदीना (कराची) सि. 2007 ई. में राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले नाबीना इस्लामी भाइयों का एक **म-दनी क़ाफ़िला** मत्लूबा मस्जिद तक पहुंचने के लिये बस में सुवार हुवा। उस म-दनी क़ाफ़िले में चन्द उ़मूमी (या'नी अंखियारे) इस्लामी भाई भी शामिल थे। अमीरे क़ाफ़िला ने बराबर बैठे शख़्स पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उस का नाम वग़ैरा मा'लूम किया तो वोह कहने लगा **:** ''मैं **क्रिस्चेन** हूं, मैं ने **मज़्हबे इस्लाम** का मुता़-लआ़ किया है और इस मज़हब से **मु-तअस्सिर** भी हूं मगर फ़ी ज़माना मुसल्मानों का बिगड़ा हुवा किरदार मेरे लिये क़बूले इस्लाम की राह में रुकावट है, मगर मैं देख रहा हूं कि आप लोग एक जैसे (सफ़ेद) लिबास में मल्बूस हैं, बस में चढ़े और बुलन्द आवाज़ से **सलाम** किया और ह़ैरत तो इस बात की है कि **आप के साथ नाबीना अश्ख़ास ने भी सर पर सब्ज़ इ़मामा और सफ़ेद लिबास को अपना रखा है, इन सब के चेहरों पर दाढ़ी भी है।''**

उस की गुफ़्त-गू सुनने के बा'द **अमीरे क़ाफ़िला** ने उसे मुख़्तसर त़ौर पर **''मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई''** के बारे में बताया। फिर शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دامت بَرَکاتُہُمُ العالیہ की दीने इस्लाम के लिये की जाने वाली अ़ज़ीम ख़िदमात का तज़्किरा किया और **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल का तआ़रुफ़ भी करवाया। फिर उस से कहा कि ''येह नाबीना इस्लामी भाई उन्ही दुन्यादार मुसल्मानों (जिन्हें देख कर आप इस्लाम क़बूल करने से कतरा रहे हैं) की इस्लाह़ के लिये निकले हैं।'' **येह बात सुन कर वोह इतना मु-तअस्सिर हुवा कि कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(8) जेलख़ाने : क़ैदियों की ता'लीम व तरबिय्यत के लिये जेलख़ानों में भी म-दनी काम की तरकीब है। कराची सेन्ट्रल जेल में क़ैदियों को आ़लिम बनाने के लिये जामिअ़तुल मदीना का भी सिल्सिला है। कई डाकू और जराइम पेशा अफ़राद जेल के अन्दर होने वाले म-दनी कामों से **मु-तअस्सिर** हो कर **ताइब** होने के बा'द रिहाई पा कर आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनने और सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने की सआ़दत पा रहे हैं, आ-तशीं अस्लिह़े के ज़रीए अंधाधुंद गोलियां बरसाने वाले अब सुन्नतों के म-दनी फूल बरसा रहे हैं! **मुबल्लिग़ीन** की इन्फ़िरादी कोशिशों के बाइ़स **कुफ़्फ़ार क़ैदी भी मुशर्रफ़ ब इस्लाम** हो रहे हैं।

म-दनी महबूब की ज़ुल्फ़ों का असीर

दा'वते इस्लामी के वसीअ़ दाइरए कार को ब हुस्नो ख़ूबी चलाने के लिये मुख़्तलिफ़ मुल्कों और शहरों में **मु-तअ़द्दद** मजालिस बनाई जाती हैं। मिन जुम्ला **मजलिसे राबिता बिल उ़-लमाए वल मशाइख़** भी है जो कि अक्सर उ़-लमाए किराम पर मुश्तमिल है। इस मजलिस के इस्लामी भाई मशहूर दीनी दर्सगाह जामिआ राशिदिय्या (पीर जो गोठ बाबुल इस्लाम सिन्ध) तशरीफ़ ले गए। बर सबीले तज़्किरा **जेलख़ानों** में दा'वते इस्लामी के म-दनी काम की बात चली तो वहां के शैख़ुल ह़दीस साहिब कुछ इस त़रह़ फ़रमाने लगे, जेलख़ानों के म-दनी काम की ताबनाक म-दनी कारकर्दगी मैं ख़ुद आप को सुनाता हूं, पीर जो गोठ के नवाह़ में **एक डाकू** ने तबाही मचा रखी थी, मैं उस को जानता था, आए दिन पोलीस के साथ उस की आंख मिचोली जारी रहती, कई बार गरिफ़्तार भी हुवा मगर असरो रुसूख़ इस्ति'माल कर के छूट गया। आख़िरश किसी जुर्म की पादाश में बाबुल मदीना कराची की पोलीस के हथ्थे चढ़ गया, सज़ा हुई और जेल में चला गया। सज़ा काट लेने के बा'द रिहाई मिलने पर मुझ से मिलने आया। मैं पहली नज़र में उस को पहचान न सका क्यूं कि मैं ने इस को दाढ़ी मुंडा और सर बरह्ना देखा था मगर अब **इस के चेहरे** पर मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की **महब्बत** की निशानी **नूरानी दाढ़ी** जगमगा रही थी, सर पर **सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़** का ताज अपनी बहारें लुटा रहा था, पेशानी पर नमाज़ों का **नूर** नुमायां नज़र आ रहा था। मेरी ह़ैरत का त़िलिस्म तोड़ते हुए वोह बोला, क़ैद के दौरान जेल के अन्दर اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मुझे **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल मुयस्सर आ गया और आ़शिक़ाने रसूल की **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से मैं ने गुनाहों की बेड़ियां काट कर अपने आप को **म-दनी महबूब** صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की **ज़ुल्फ़ों का असीर** बना लिया।

रह़मतों वाले नबी के गीत जब गाता हूं मैं — गुम्बदे ख़ज़रा के नज़्ज़ारों में खो जाता हूं मैं

जाऊं तो जाऊं कहां मैं किस का ढूंडूं आसरा — लाज वाले लाज रखना तेरा कहलाता हूं मैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالٰى علٰى محمَّد

(9) इज्तिमाई ए'तिकाफ़ : दुन्या की बे शुमार मसाजिद में माहे र-मज़ानुल मुबारक के 30 दिन और **आख़िरी अ़-शरे में इज्तिमाई ए'तिकाफ़ का** एहतिमाम किया जाता है। इन में हज़ारहा इस्लामी भाई **इ़ल्मे दीन ह़ासिल करते**, सुन्नतों की तरबिय्यत पाते हैं। नीज़ कई **मो'तकिफ़ीन** चांद रात ही से आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन जाते हैं।

ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से सारा ख़ानदान मुसल्मान हो गया

एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि कल्यान (महाराष्ट्र, अल हिन्द) की **मेमन मस्जिद** में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की जानिब से र-मज़ानुल मुबारक (सि. 1426 हि./2005 ई.) में होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में एक नौ मुस्लिम ने (जो कि कुछ अ़र्सा क़ब्ल एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के हाथों मुसल्मान हुए थे) ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल की। सुन्नतों भरे बयानात, केसिट इज्तिमाआ़त और सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों ने उन पर ख़ूब म-दनी रंग चढ़ाया, ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से दीन की तब्लीग़ के अ़ज़ीम जज़्बे का रोशन चराग़ उन के हाथों में आ गया चूंकि उन के घर के दीगर

अफ़्राद अभी तक कुफ़्र की अंधेरी वादियों में भटक रहे थे चुनान्चे ए'तिकाफ़ से फ़ारिग़ होते ही उन्हों ने अपने घर वालों पर कोशिश शुरूअ़ कर दी, दा'वते इस्लामी के **मुबल्लिग़ीन** को अपने घर बुलवा कर **दा'वते इस्लाम** पेश करवाई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **वालिदैन, दो बहनों और एक भाई पर मुश्तमिल सारा ख़ानदान मुसल्मान हो गया फिर सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर हुज़ूरे ग़ौसे पाक** علیہ رحمۃ اللہ الرزاق **का मुरीद बन गया।**[1]

वल्वला दीं की तब्लीग़ का पाओगे *म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
फ़ज़्ले रब से ज़माने पे छा जाओगे *म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلی اللہ تعالیٰ علیٰ محمد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि. 1, स. 1470)

Foot Note 1 : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ दौरे ह़ाज़िर की वोह यगानए रूज़गार हस्ती हैं कि जिन से श-रफ़े बैअ़त की ब-र-कत से लाखों मुसल्मान गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम और उस के **प्यारे ह़बीबे** लबीब صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त हमारा **म-दनी मश्वरा** है कि अगर आप अभी तक किसी जामेए शराइत़ पीर साह़िब से बैअ़त नहीं हुए तो शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دامت برکاتہم العالیہ के फ़ुयूज़ो ब-रकात से **मुस्तफ़ीद** होने के लिये इन से **बैअ़त** हो जाइये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में काम्याबी व सुरख़ुरूई नसीब होगी।

मुरीद बनने का त़रीक़ा : अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं, तो अपना और जिन को **मुरीद या त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार मअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर **''मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या'' म-दनी मर्कज़ दा'वते इस्लामी तीन कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ा पूर ,अह़मद आबाद - गुजरात** के पते पर रवाना फ़रमा दें, तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या में दाख़िल कर लिया जाएगा। (पता इंग्रेज़ी के केपीटल ह़ुरूफ़ में लिखें) E.Mail : Attar@dawateislami.net

(10) हफ़्तावार, (11) सूबाई और (12) ह़ज के बा'द सब से बड़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ : दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में हज़ारों मक़ामात पर होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त के इ़लावा आ़लमी और सूबाई सत़्ह़ पर भी सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त होते हैं। जिन में हज़ारों, लाखों आ़शिक़ाने रसूल शिर्कत करते हैं और इज्तिमाअ़ के बा'द ख़ुश नसीब इस्लामी भाई सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** के मुसाफ़िर भी बनते हैं। मदी-नतुल औलिया मुलतान शरीफ़ (पाकिस्तान) में वाक़ेअ़ **सह़राए मदीना** के कसीर रक़्बे पर हर साल 3 दिन का बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ होता है, जिस में दुन्या के कई मुमालिक से म-दनी क़ाफ़िले शिर्कत करते हैं। बिला शुबा येह मुसल्मानों का ह़ज के बा'द सब से बड़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ होता है।

नशे की आ़दत छूट गई

नवाब शाह (सिन्ध) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे बैनल अक़्वामी **इज्तिमाअ़** की तय्यारियां ज़ोरो शोर से जारी थीं। मुश्कबार म-दनी माहोल की तरबिय्यत की बदौलत मेरा भी **नेकी की दा'वत आ़म करने का ज़ेह्न** था चुनान्चे मैं ने एक नौ जवान को इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की तो कहने लगे : भाई मैं किसी वजह से इज्तिमाअ़ में नहीं जा सकता। मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का

नाम लिया और नेक सफ़र और नेक इज्तिमाआ़त के फ़ज़ाइल बताने शुरूअ़ कर दिये। रब तआ़ला को उस का भला मक़्सूद था। वोह नौ जवान तय्यार हो गया और हम **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की बहारें लूटने के लिये इज्तिमाअ़ में पहुंच गए। कुछ देर तक तो सब ठीक ठाक चला फिर अचानक उस नौ जवान की ह़ालत ग़ैर होने लगी और उस ने वापसी की ठान ली लेकिन आ़रिज़ी इ़लाज और इस्लामी भाइयों की **इन्फ़िरादी कोशिश** की बदौलत वोह मुत्मइन हो गया। इज्तिमाअ़ की पुरकैफ़ बहारों में उस नौ जवान ने ख़ूब ख़ूब इक्तिसाबे फ़ैज़ किया और ख़ूब रो रो कर दुआ़एं मांगीं, इख़्तिताम इज्तिमाअ़ पर हम घर आ गए। फिर कुछ माह बा'द उस नौ जवान से मुलाक़ात हुई तो उस नौ जवान से ह़ाल अह़वाल पूछा, उस ने ह़ैरत अंगेज़ बात बताई कि दर अस्ल मुझे नशे की लत पड़ गई थी, बिग़ैर इन्जेक्शन लगाए सुकून नहीं मिलता था, मुंह लगी चीज़ छोड़ना दुश्वार तरीन था, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप का भला करे कि मुझे इज्तिमाअ़ में ले गए اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जब से सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से वापसी हुई है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से मुझे नशे की ला'नत से **छुटकारा** नसीब हो गया है। न सिर्फ़ सिह़्ह़त संभल गई बल्कि मेरे और बहुत से बिगड़े काम संवर गए हैं।

(13) इस्लामी बहनों में म-दनी इन्क़िलाब : इस्लामी बहनों के भी शर-ई पर्दे के साथ **मु-तअ़द्दद** मक़ामात पर हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त होते हैं। **ला ता'दाद बे अ़मल इस्लामी बहनें बा अ़मल, नमाज़ी और म-दनी बुरक़ओं की पाबन्द** हो चुकी हैं। दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में घरों के अन्दर इन के तक़रीबन रोज़ाना हज़ारों मदारिस बनाम मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ात) भी लगाए जाते हैं, एक अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ ता दमे तह़रीर पाकिस्तान भर में इस्लामी बहनों के **3268** मद्रसे तक़रीबन रोज़ाना लगते हैं जिन में **40453** इस्लामी बहनें क़ुरआने पाक, नमाज़ और सुन्नतों की मुफ़्त ता'लीम पातीं और दुआ़एं याद करती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़िम्मेदार इस्लामी बहनों की म-दनी तरबिय्यत के लिये मुल्क के मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर **''क़ुरआनो ह़दीस कोर्स''** और बाबुल मदीना (कराची) में 12 दिन के **तरबिय्यती कोर्स और क़ाफ़िला कोर्स** की भी तरकीब होती है।

मैं फ़ेशन एबल थी

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है **: दा'वते इस्लामी** की ब-र-कतें पाने से क़ब्ल मैं एक **फ़ेशन एबल** लड़की थी। **बाल कटवाना, लम्बे लम्बे नाख़ुन रखना, भवें बनवाना, ज़र्क़ बर्क़ व चुस्त लिबास** पहन कर दुपट्टा गले में लटका कर तफ़रीह़ गाहों में घूमना फिरना मेरा काम था। **गाने** सुनने का तो ऐसा शौक़ था कि छोटा सा **रेडियो** मेरे पास रहता जिसे मैं हर वक़्त ऑन रखती। शादियों में **ढोलक** बजाती, गाने गाती थी। मुझे अपनी ज़िन्दगी बड़ी पुर लुत़्फ़ और **बा रौनक़** लगती थी मगर नहीं जानती थी कि येह अन्दाज़े ज़िन्दगी **क़ब्रो ह़श्र** में मेरी परेशानी का सबब बन सकता है। बिल आख़िर मुझे ढंग से जीने का **सलीक़ा** आ गया। येह सलीक़ा मुझे ''फ़ैज़ाने मदीना'' में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** से मिला। मैं म-दनी माह़ोल से ऐसी **मु-तअस्सिर** हुई कि क्या ज़ैली सत़्ह़ का इज्तिमाअ़ क्या शहर सत़्ह़ का ! हर इज्तिमाअ़ में शिर्कत को अपना मा'मूल बना लिया। बयान कर्दा गुनाहों से बचने पर **इस्तिक़ामत** नसीब हो गई। शर-ई पर्दा करने के लिये **म-दनी बुरक़अ़** अपने लिबास का ह़िस्सा

बना लिया। **मद्र-सतुल मदीना** (लिल बनात) में दाख़िला ले कर तज्वीद से **क़ुरआने पाक** पढ़ना न सिर्फ़ सीख लिया बल्कि दूसरों को सिखाने वाली या'नी **मुअ़ल्लिमा** बन गई। ता दमे तह़रीर दा'वते इस्लामी के ज़ैली सत्ह़ के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ज़िम्मेदार हूं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ रू सियाह को दा'वते इस्लामी के "म-दनी माह़ोल" में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(14) म-दनी इन्आ़मात : इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों और त़-लबा को फ़राइज़ व वाजिबात, सुनन व **मुस्तह़ब्बात** और अख़्लाक़ियात का पाबन्द बनाने और मोहलिकात (या'नी हलाकत में डालने वाले आ'माल) से बचाने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** की सूरत में एक **निज़ामे अ़मल** दिया गया है। बे शुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त़-लबा "म-दनी इन्आ़मात" के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल "**फ़िक्रे मदीना**" या'नी अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर जेबी साइज़ रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं।

म-दनी इन्आ़मात किस के लिये कितने ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ए कार पर मुश्तमिल शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मज्मूआ़ बनाम "**म-दनी इन्आ़मात**" ब सूरते सुवालात मुरत्तब किया गया है। इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63**, त़-ल-बए इ़ल्मे दीन के लिये **92**, दीनी त़ालिबात के लिये **83**, म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों के लिये **40,** जब कि ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों (या'नी गूंगे बहरों) के लिये **27 म-दनी इन्आ़मात** हैं।

रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म

एक इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा है : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे **म-दनी इन्आ़मात** से प्यार है और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** करने का मेरा मा'मूल है। एक बार मैं तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सूबए बलूचिस्तान (पाकिस्तान) के सफ़र पर था। इसी दौरान मुझ गुनहगार पर बाबे करम खुल गया। हुवा यूं कि रात को जब सोया तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए, अभी जल्वों में गुम था कि लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : जो म-दनी क़ाफ़िले में **रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हैं मैं उन्हें अपने साथ जन्नत में ले जाऊंगा।**

शुक्रिया क्यूंकर अदा हो आप का या मुस्त़फ़ा
कि पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फैज़ाने र-मज़ान, फ़ज़ाइले र-मज़ान शरीफ़, जि. 1, स. 931)

(15) म-दनी मुज़ा-करात : बसा अवक़ात "म-दनी मुज़ा-करात" के इज्तिमाआ़त का इन्इ़क़ाद भी होता है

जिस में अ़क़ाइद व आ'माल, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, त़िबाबत व रूहानिय्यत वग़ैरा **मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त** पर पूछे गए सुवालात के जवाबात दिये जाते हैं। (येह जवाबात ख़ुद अमीरे अहले सुन्नत دامت بَرَکاتُہُمُ العالیہ देते हैं)

(16) रूहानी इ़लाज और इस्तिख़ारा : दुखियारे मुसल्मानों का ता'वीज़ात के ज़रीए **फ़ी सबीलिल्लाह इ़लाज** किया जाता है। ता दमे तह़रीर माहाना 3 लाख से ज़ाइद ता'वीज़ात और अवरादो वज़ाइफ़, 30 हज़ार से ज़ाइद मक्तूबात और कमो बेश 31 हज़ार इस्तिख़ारे भी किये जाते हैं।

ज़िन्दा लाश

सूबए सरह़द के शहर कोहाट में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि हमारे अ़लाक़े के एक इस्लामी भाई शदीद **बीमार** थे। कमज़ोरी इतनी कि बिग़ैर सहारे के बिस्तर से उठना भी दुश्वार था। उन की ह़ालत देख कर ऐसा लगता था कि गोया "**ज़िन्दा लाश**" हैं। 4 माह इसी आज़माइश में गुज़र गए। रफ़्ता रफ़्ता शिफ़ा की आस "यास" में बदलती जा रही थी। ख़ूबिये क़िस्मत कि एक इस्लामी भाई ने उन को येह मश्वरा दिया कि आप "**मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या**" के बस्ते से ता'वीज़ात ह़ासिल करें और वहीं से लिखी हुई मख़्सूस प्लेटों का कोर्स भी करवाएं (जो कि 40 कप्लेटों पर मुश्तमिल होता है) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा मिलेगी। उस इस्लामी भाई के मश्वरे पर अ़मल करते हुए उन्हों ने **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के बस्ते से ता'वीज़ात ह़ासिल किये और लिखी हुई मख़्सूस प्लेटें भी ह़ासिल कीं। अभी उन्हों ने तीन ही प्लेटें इस्ति'माल की थीं कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन की **त़बीअ़त** काफ़ी ह़द तक संभल गई। 40 प्लेटें मुकम्मल होने पर उन की त़बीअ़त मज़ीद **बेहतर** हो गई। अब वोह रू ब सिह़्ह़त हैं और शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دامت بَرَکاتُہُمُ العالیہ से बैअ़त हो कर **अ़त्तारी** भी बन चुके हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो***

اٰمین بجاہ النبی الامین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(17) ह़ुज्जाज की तरबिय्यत : ह़ज के मौसिमे बहार में ह़ाजी केम्पों में **मुबल्लिग़ीने** दा'वते इस्लामी **ह़ाजियों की तरबिय्यत** करते हैं। ह़ज व ज़ियारते मदीनए मुनव्वरह में रहनुमाई के लिये मदीने के मुसाफ़िरों को मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **ह़ज की किताब** "रफ़ीकुल ह़-रमैन" भी **मुफ़्त** पेश की जाती है।

(18) ता'लीमी इदारे : ता'लीमी इदारों म-सलन दीनी मदारिस, स्कूल्ज़, कॉलेजिज़ और यूनीवर्सिटीज़ के असातिज़ा व त़-लबा को मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की सुन्नतों से रू शनास करवाने के लिये भी म-दनी काम हो रहा है। बे शुमार त़-लबा सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत करते हैं नीज़ म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर भी बनते रहते हैं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मु-तअ़द्दद दुन्यवी उ़लूम के दिलदादा **बे अ़मल त़-लबा, नमाज़ी और सुन्नतों के आ़दी** हो गए।

(19) जामि-अ़तुल मदीना : मुल्क व बैरूने मुल्क में कसीर जामिआ़त बनाम "जामिअ़तुल मदीना" क़ाइम

हैं इन के ज़रीए़ ला ता'दाद इस्लामी भाइयों को (ह़स्बे ज़रूरत क़ियाम व त़आ़म की सहूलतों के साथ) ''दर्से निज़ामी'' (या'नी आ़लिम कोर्स) और इस्लामी बहनों को ''आ़लिमा कोर्स'' की मुफ़्त ता'लीम दी जाती है। अहले सुन्नत के मदारिस के मुल्क गीर इदारा तन्ज़ीमुल मदारिस (पाकिस्तान) की जानिब से लिये जाने वाले इम्तिह़ानात में बरसों से तक़रीबन हर साल ''दा'वते इस्लामी'' के जामिआ़त के त़-लबा और त़ालिबात पाकिस्तान में **नुमायां काम्याबी** ह़ासिल कर के बसा अवक़ात अव्वल, दुवुम और सिवुम पोज़ीशन ह़ासिल करते हैं।

(20) मद्र-सतुल मदीना : अन्दरूने व बैरूने मुल्क ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा के ला ता'दाद मदारिस बनाम ''मद्र-सतुल मदीना'' क़ाइम हैं। पाकिस्तान में ता दमे तह़रीर कमो बेश **70 हज़ार** म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नियों को ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जा रही है।

(21) मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ान) : इसी त़रह़ मुख़्तलिफ़ मसाजिद वग़ैरा में उ़मूमन बा'द नमाज़े इ़शा **हज़ारहा मद्र-सतुल मदीना** की तरकीब होती है जिन में इस्लामी भाई सह़ीह़ मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ क़ुरआने करीम सीखते और दुआ़एं याद करते, नमाज़ें वग़ैरा दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त ह़ासिल करते हैं।

(22) शिफ़ा ख़ाने : मह़दूद पैमाने पर शिफ़ा ख़ाने भी क़ाइम हैं जहां बीमार त़-लबा और म-दनी अ़-मले का **मुफ़्त इ़लाज** किया जाता है, ज़रूरतन दाख़िल भी करते हैं नीज़ ह़स्बे ज़रूरत बड़े अस्पतालों के ज़रीए़ भी इ़लाज की तरकीब बनाई जाती है।

(23) तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह : या'नी ''मुफ़्ती कोर्स'' और ''**तख़स्सुस फ़िल फ़ुनून**'' का भी सिल्सिला है जिस में मु-तअ़ह्ह़द उ़-लमाए किराम **इफ़्ता की तरबिय्यत** और मख़्सूस इ़ल्मी फ़न की महारत पा रहे हैं।

(24) शरीअ़त कोर्स व तिजारत कोर्स : ज़रूरिय्याते दीन से
रू शनास करवाने के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ करवाए जाते हैं म-सलन अपनी नौइ़य्यत का मुन्फ़रिद ''**शरीअ़त कोर्स**'' और ''**तिजारत कोर्स**'' वग़ैरा।

(25) मजलिसे तह़क़ीक़ाते शर-इ़य्या : मुसल्मानों को पेश आ-मदा **जदीद मसाइल के ह़ल** के लिये **मजलिसे तह़क़ीक़ाते शर-इ़य्या** मसरूफ़े अ़मल है जो कि दा'वते इस्लामी के **मुबल्लिग़ीन** उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम पर मुश्तमिल है।

(26) दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत : मुसल्मानों के शर-ई मसाइल के **ह़ल** के लिये **मु-तअ़ह्ह़द** ''दारुल इफ़्ता क़ाइम'' किये गए हैं जहां दा'वते इस्लामी के **मुबल्लिग़ीन** मुफ़्तियाने किराम, बिल मुशाफ़ा, तह़रीरी और मक्तूबात के ज़रीए़ शर-ई मसाइल का ह़ल पेश कर रहे हैं। अक्सर फ़तावा कम्पयूटर पर कम्पोज़ कर के दिये जाते हैं।

(27) इन्टरनेट : इन्टरनेट की वेब साइट www.dawateislami.net के ज़रीए़ दुन्या भर में **इस्लाम का पैग़ाम** आ़म किया जा रहा है।

(28) हाथों हाथ दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत : दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net

में दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत पर दुन्या भर के मुसल्मानों की त़रफ़ से पूछे जाने वाले **मसाइल का ह़ल** बताया जाता, कुफ़्फ़ार के इस्लाम पर **ए'तिराज़ात के जवाबात** दिये जाते और इन को **इस्लाम की दा'वत** पेश की जाती है। नीज़ दुन्या भर से किये जाने वाले सुवालात के रात दिन हाथों हाथ फ़ोन पर जवाबात दिये जाते हैं। (वोह फ़ोन नम्बर येह है : 0092-021-34940443)

(29, 30) मक-त-बतुल मदीना और अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या : इन दोनों इदारों के ज़रीए़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت और **दीगर उ़-लमाए अहले सुन्नत की किताबें** ज़ेवरे त़ब्अ़ से आरास्ता हो कर **लाखों लाख** की ता'दाद में अ़वाम के हाथों में पहुंच कर सुन्नतों के फूल खिला रही हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के अपने प्रेस (Press) भी क़ाइम हैं। नीज़ सुन्नतों भरे बयानात और म-दनी मुज़ा-करात की लाखों केसिटें (ऑडियो, वीडियो) भी दुन्या भर में पहुंचीं और पहुंच रही हैं।

(31) मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल : ग़ैर मोह़तात़ कुतुब छापने के सबब उम्मते मुस्लिमा में फैलने वाली ग़लत फ़हमियों और शर-ई ग़-लति़यों के **सद्दे बाब** के लिये "मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल" क़ाइम है जो **मुसन्निफ़ीन** व **मुअल्लिफ़ीन** की कुतुब को अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्यात, अख़्लाक़ियात, अ़-रबी इ़बारात और फ़िक़्ही मसाइल के ह़वाले से मुला-ह़ज़ा कर के सनद जारी करती है।

(32) मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ : मुबल्लिग़ीन की **तरबिय्यत** के लिये मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ का एहतिमाम किया जाता है म-सलन 41 दिन का म-दनी क़ाफ़िला कोर्स, 63 दिन का तरबिय्यती कोर्स, गूंगे बहरों के लिये 30 का कुफ़्ले मदीना कोर्स, इमामत कोर्स और मुदर्रिस कोर्स। इसी त़रह़ स्कूल व कॉलेज और जामिआ़त के त़-लबा के लिये छुट्टियों के दौरान मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ कराए जाते हैं म-सलन दौरए सर्फ़ व नह्व कोर्स, अ़-रबी तकल्लुम कोर्स, इ़ल्मे तौक़ीत कोर्स, कम्पयूटर कोर्स वग़ैरहुम।

(33) ईसाले सवाब : अपने मर्ह़ूम अ़ज़ीज़ों के नाम डलवा कर फ़ैज़ाने सुन्नत, नमाज़ के अह़काम और दीगर छोटी बड़ी किताबें तक़्सीम करने के ख़्वाहिश मन्द इस्लामी भाई मक-त-बतुल मदीना से राबित़ा करते हैं।

(34) मक-त-बतुल मदीना के बस्ते : शादी बियाह व दीगर ख़ुशी व ग़मी के मवाक़ेअ़ पर अहले ख़ाना की त़रफ़ से मुफ़्त किताबें बांटने के लिये मक-त-बतुल मदीना के बस्ते लगाए जाते हैं, येह ख़िदमत मक्तबे का म-दनी अ़-मला ख़ुद पेश करता है आप सिर्फ़ राबित़ा फ़रमाइये।

(35) मजलिसे तराजिम : मक-त-बतुल मदीना से उर्दू में शाएअ़ होने वाले रिसालों के मुख़्तलिफ़ ज़बानों म-सलन अ़-रबी, फ़ारसी, इंग्रेज़ी, रशियन, सिन्धी, पुश्तो, तमिल, फ़्रेन्च, सवाहीली, डेनिश, जर्मन, हिन्दी, बंगला और गुजराती वग़ैरा में तराजिम कर के इसे दुन्या के कई मुमालिक में भेजने की तरकीब की जाती है।

(36) बैरूने मुल्क इज्तिमाआ़त : दुन्या के कई मुमालिक में दो, दो दिन के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त का इन्इ़क़ाद किया जाता है जहां हज़ारों मक़ामी इस्लामी भाई शिर्कत करते हैं नीज़ इन इज्तिमाआ़त की ब-र-कत से वक़्तन फ़ वक़्तन ग़ैर मुस्लिम, मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो जाते हैं। इन इज्तिमाआ़त से हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िले राहे

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र इख़्तियार करते हैं।

(37) तरबिय्यती इज्तिमाआ़त : मुल्क व बैरूने मुल्क में ज़िम्मेदारान के 2/3 दिन के ''तरबिय्यती इज्तिमाआ़त'' मुन्अ़क़िद किये जाते हैं जिन में हज़ारों ज़िम्मेदारान शिर्कत कर के मज़ीद बेहतर अन्दाज़ में म-दनी काम करने का अ़ज़्म कर के लौटते हैं।

(38) म-दनी चेनल : मुल्क व बैरूने मुल्क इस की बहारें जोबनों पर हैं। कई कुफ़्फ़ार दौलते ईमान से मालामाल हुए, न जाने कितने बे नमाज़ी, नमाज़ी बने, मु-तअ़द्दद अफ़राद गुनाहों से ताइब हुए और सुन्नतों भरी ज़िन्दगी का आग़ाज़ किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह एक ऐसा 100 फ़ी सदी इस्लामी चेनल है कि इस के ज़रीए़ घर बैठे अच्छा ख़ासा इ़ल्मे दीन सीखा जा सकता है।

(39) मजलिसे राबिता़ : अहम दीनी, सियासी, समाजी, खेल और दीगर शो'बाहाए ज़िन्दगी से तअ़ल्लुक़ रखने वाली शख़्सिय्यात को दा'वते इस्लामी का पैग़ाम पहुंचाने के लिये मजलिस मसरूफ़े अ़मल रहती है।

(40) मजलिसे मालियात : प्रोफ़ेशनल अकाउटन्ट (professionel accountant) और ज़िम्मेदारान की ज़ेरे निगरानी ''दा'वते इस्लामी'' की आम्दन व अख़राजात की देखभाल के लिये मजलिसे मालियात भी क़ाइम है।

राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल

5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

﴿1﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुज़ैम बिन फ़ातिक رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि रसूले अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने फ़रमाया : ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में कुछ ख़र्च करे उस के عَزَّوَجَلَّ लिये सात सो गुना सवाब लिखा जाता है।''

(ترمذی، ج۳، ص ۲۳۳)

﴿2﴾ तुम में से कौन है कि उसे अपने वारिस का माल अपने माल से ज़ियादा महबूब है? सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم! हम में से कोई ऐसा नहीं जिसे अपना माल ज़ियादा महबूब न हो। फ़रमाया : अपना माल वोह है जो आगे रवाना किया जो पीछे छोड़ गया वोह वारिस का माल है।

(بخاری، ج٤، ص٢٣٠، حدیث٦٤٤٢)

﴿3﴾ स-दक़ा बुराई के सत्तर दरवाज़े बन्द करता है। (بیہقی ج٤، ص١٠٩، حدیث٤٤٠٢)

﴿4﴾ स-दक़ा बुरी मौत को रोकता है। (ترمذی ج٢، ص١٤٦، حدیث٦٦٤)

﴿5﴾ ''ख़र्च करो और शुमार न करो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शुमार कर के देगा।''

(بخاری، ج١، ص٤٨٣، حدیث١٤٣٣، ١٤٣٤)

म-दनी इल्तिजाएं

इस इज्माली फ़ेहरिस के इ़लावा भी اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मज़ीद कई म-दनी काम हैं। बराए करम! अपनी ज़कात, फ़ित्रा, स-दक़ात, अ़ति़य्यात और क़ुरबानी की खालें देने के साथ साथ अपने रिश्तेदारों, पड़ोसियों और दोस्तों पर भी इन्फ़िरादी कोशिश फ़रमा कर इन के अ़ति़य्यात और क़ुरबानी की खालें भी **दा'वते इस्लामी के म-दनी मर्कज़** पर पहुंचा कर या किसी ज़िम्मेदार इस्लामी भाई को दे कर

या म-दनी मर्कज़ पर फ़ोन कर के किसी इस्लामी भाई को त़लब फ़रमा कर उन्हें इ़नायत फ़रमा दीजिये। देने के बा'द रसीद ज़रूर ह़ासिल कीजिये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप का सीना मदीना बनाए।

امین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

एक अहम शर-ई़ मस्अला

हमेशा कुरबानी की खालें और नफ़्ली अ़तिय्यात "**कुल्ली इख़्तियारात**" या'नी किसी भी नेक और जाइज़ काम में ख़र्च कर लिये जाएं इस निय्यत से इ़नायत फ़रमाया करें क्यूं कि अगर मख़्सूस कर के दिया म-सलन कहा कि, "येह **दा'वते इस्लामी** के मद्रसे के लिये है" तो अब मस्जिद या किसी और मद (या'नी उ़न्वान) में इस का इस्ति'माल करना गुनाह हो जाएगा। लेने वाले को भी चाहिये कि अगर किसी मख़्सूस काम के लिये भी चन्दा ले तो एह़तियात़न कह दिया करे कि हमारे यहां म-सलन दा'वते इस्लामी में और भी दीनी काम होते हैं। आप हमें "**कुल्ली इख़्तियारात**" दे दीजिये ताकि येह रक़म **दा'वते इस्लामी** जहां मुनासिब समझे वहां नेक और जाइज़ काम में ख़र्च करे। (ज़कात और फ़ित्रा में कुल्ली इख़्तियारात लेने की ह़ाजत नहीं क्यूं कि येह "शर-ई़ ह़ीले" के ज़रीए़ इस्ति'माल किये जाते हैं।)

म-दनी मर्कज़ दा'वते इस्लामी फ़ैज़ाने मदीना

तीन कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ा पूर, अह़मद आबाद - 380001 गुजरात (INDIA)

अ़तिय्यात जम्अ़ करवाने के लिये बेंक एकाउन्ट नम्बर्ज़

म-दनी चेनल और स-दक़ाते नाफ़िला के लिये

Bank Name : State bank of india. A /C Name. : **Dawate islami hind**

A /C No. : 30216534242

ज़कात व स-दक़ाते वाजिबा जम्अ़ करवाने के लिये

Bank Name : Axis bank

A /C Name. : **Dawate islami Hind**

A /C No. : 910010026818286